

1 (c) प्रदत्तावना के ~~प्रत्यक्ष~~ ^{प्रत्येक} की आहर्णी छोटी मात्रा की अर्थव्याप्ति
 और इसनीति द्वारा उत्तरी ~~स्वीकृत्या~~ की प्रत्युति की बीच संबंध
 का आलीचतालुक परिणाम छोटी

Ans: भारतीय संविधान की प्रत्यावना भारत को एक संघ प्रज्ञ राज्य के रूप में प्रदत्त गयी है। ऐसी वर्तमान ~~स्वीकृत्या~~ के खुग द्वारा किसी भी राज्य की संघ प्रज्ञ वाह्य करती, जबका आवश्यक, इसनीति, दाखिले शैयादी, तथा अप्राप्ति नहीं है।

भारतीय संविधान भारत की राजनीति व्यवस्था का आहर्णी रूप है, एवं प्रत्यावना संविधान का नियंत्रित रूप है। प्रत्यावना भारत को एक संघ प्रज्ञ राज्य व्यवस्था की त्रिकांकी तात्पर्य है।

(i) भारत अपने अंतर्भुत और वाह्य नीतियों को नियंत्रित करने की लिये पूर्ण रूप की दक्षता है।

(ii) इन नीतियों को कोई वाह्य शक्ति प्रदेश वा दूरी ही दूरी पर नियंत्रित नहीं हो सकती है।

(iii) ~~नीतियों~~ इन नीतियों की अर्थव्याप्ति, इसनीति, दाखिले शैयादी राजिल है।

(iv) भारत अपने आवश्यक नीति की नियंत्रित करने की पूर्ण रूप की दक्षता है। यही उत्तरा ही दक्षता ही वाह्य, द्विचुरुप विश्व की प्रभावित

हुये विना, त तो पूर्ण कृप से फुलवाद की अपेक्षा असु
न वी पूर्ण कृप से मुख्यमान थे। एक अपने अपेक्षा
से अत्यधिक दिल्ली अस्थिरता की अपेक्षा।

(v) वही वास्तविक ही भावना की जाइन बदलाव न हो
संसुक्त दृश्य और विश्वास की विभावित हो आरे तो विही थे।
एक अपनी आवश्यकता के अत्यधिक इन दृश्यों के कुछ
कुछ प्रभावों के लिए गया है।

लेखन इस विषय पर

मुझे ही, जहाँ तुमने अस्थिरता, दृश्यों की अस्थिरता
होता है, वही भी है अपनी अस्थिरता असुक्त विभावित
की बाध्य प्रभाव है लेकिं यहाँ तक प्रभाव नहीं होता
रहता है ऐसा क्योंकि—

- (i) मुक्त अस्थिरता असुक्त होने की अवृद्धि हुई।
जो नहीं है।
- (ii) आरोग्यम् रुक्ष (IMP), विषय की, विषय विषय विषय
जीवी विषयादै विषय हैं। जी आधिक विषयों की
प्रभाव कृप से विभावित होती है। जहाँ वे विषय
साधित हो वहाँ वहाँ उपर्युक्त अवृद्धि होती है।
- (iii) विजनीति की होती है। विजनीति विजनीति, विजनीति
जीवी अवधारणा प्रभाव जो वे विभावित होती है,
विजनीति विजनीति होती है।

(iv) ਮਾਨਸ ਦੀ ਲੋਗੀ ਰਾ ਵੀਂਹਿਆ ਪ੍ਰੋਫੈਲ ਨੂੰ ਕੁਝ ਅੰਤਰੋਂ ਅੱਗੇ
ਵਿਖੇ ਬਾਹਰ ਚਾਲੀ ਕੀ ਆ ਪ੍ਰਮਾਣਿਤ ਹੋ ਜਏ ਹੈ।
ਤਥਾਹਾ, ਕਿ ਕਿਉਂ ਮਾਨਸ ਸਾਡਾ WSO ਦੀ ਵਾਰੀ ਦੀ
ਧੂਮ ਕਰਨੀ ਕੀ ਕਿਉਂ ਕੁਝ ਸ਼ਾਨਦਾਰੀ ਹੁੰਦੀ ਅਤੇ ਪ੍ਰਮਾਣਿਤ
ਕੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ, ਤੀ ਸੰਸਾਰ ਵਿੱਚ ਇਤਾਜਾ ਕੋਈ ਅਤੇ
ਇਤਿਹਾਸਕ ਸੰਭਾਵਿਤ ਪ੍ਰਗਟਾਵਾ ਹੈ ਕੀ ਕੌਂਠ ਨ ਹੈ।

ਇਹ ਪ੍ਰਤੀ ਹੈ ਤੇ ਜਾਣੋ ਕੀ?

ਮਾਨਸ ਇਹ ਸੰਪੂਰਨ ਰਾਹਾਂ ਵੀ ਜਿਵੇਂ ਆਵੇਂ ਆਂਦੋਂਨੀ ਵਿਖੇ
ਵੀਂਹਿਆ ਕੁਝ ਹੋ ਤਾਂ ਕਾਹਿੰਦਾ / ਇਹੋ ਕੀ ਪ੍ਰਮਾਣਿਤ
ਕੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਜੇਕਿ ਇਹੋ ਸੰਪੂਰਨ ਹੋ ਅਤੇ ਹੁਕਮਾਂ ਕੀ
ਕੁਝ ਦੀ ਰਾਹਿਂ ਹੋਵਾ ਤਾਂ ਕਾਹਿੰਦਾ ਵਿਖੇ ਨਹੀਂ ਵਿਖੇ-
ਨਹੀਂ (ਯੋਗ ਸੰਨ੍ਦੇ) ਪ੍ਰਮਾਣਿਤ ਕੀ ਜਾਵੇਗੀ।

26) प्रस्तावना में उल्लिखित आहरी - साध, निर्वता, दृष्टि आहरी
वंचुले कड़-कड़े एवं निर्वत हैं। इनमें से इन आहरी की
प्रति की सीधा का आलोचनात् शुभांग रहे हैं।

मारतीप संविधान वा प्रस्तावना तें आहरी की उद्दीपना
करती है जो भारतीय समक्ष नामांकित है। ये प्रबोधना गता
है। ये आहरी हैं - साध, निर्वता, दृष्टि आहरी वंचुले।

इन आहरी की संविधान से
राष्ट्रवालीक प्राप्ति, तथा संविधान निर्माण की भावनाओं
के अध्ययन विभिन्न विद्यार्थी वार्ताकाल बिपा है।

(i) साध :- साध का अर्थ है प्रत्येक व्यक्ति की उपर्युक्त आविष्कारी
क्षमता और निपत्ति के अनुदार अधिकतम रूप की है
प्रदान करता।

प्रस्तावना के तीन पक्षों के साध की वर्णन
आविष्कार, शास्त्रीय और वास्तविक साध।

(ii) निर्वता :- निर्वता का अर्थ है, मुश्तिमुक्त निवृत्ति के
साथ, प्रत्येक व्यक्ति की नियन्त्रण अस्तियासि अवृ
क्षार्थ करने के बहुतता।

(iii) संपत्ति :- संपत्ति का अर्थ है सभी व्यक्तियों की,
साधारणता, आविष्कार वा दृष्टिक्षमता पृष्ठप्रदि की पर्याप्ति,
संपादन आविष्कार और अवसर प्रदान करता।

(iv) बंधुत्वः— प्रदर्शन का दूसरा विषय बंधुत्व या उद्देश्य है जिसमें आदि समुदायों के बीच आपसी सहायता की उडाना होता है।

प्रदर्शन का दूसरा विषय आजकी रुप इससे पर निपटता है क्योंकि—

(क) व्याप के किंवदन्तिया प्राप्त नहीं की गई जानकारी है।

(ख) व्यवस्था की स्थिति के बिना समाज का व्याप्ति बढ़ी की गई जानकारी है।

(ग) सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक समस्या के बिना बंधुत्व की अवधारणा विचारित नहीं की गई जानकारी है।

(घ) भारत के कुली अमुम्हों द्वारा बंधुत्व के बिना आर्थिक,

सामाजिक राजनीतिक व्यापक नहीं प्राप्त की गई जानकारी है।

भारत में, प्रदर्शन का दूसरा विषय आजकल ज्ञान और प्राप्ति की उडाना में निपटना ज्ञान और ज्ञान की उडाना है—

(i) 'व्याप' की भारतीय संस्कृतान के वीति निष्ठात्वा तथा के अन्तर्गत ज्ञान व्यापा है। व्याप की ज्ञान अपेक्षा एवं ज्ञानी है जो वीति निष्ठात्वा तथा के विषय व्याप्ति उड़ाना है।

वीति निष्ठात्वा तथा में शामिल व्याप व्याप के लिये व्याप्ति व्याप्ति व्याप्ति व्याप्ति है।

~~(ii)~~ કાર્યક્રમ અને લખ્યો એવી પ્રાપ્ત રહેલી વિગત જો કુદા હો

(ii) સુવંધા, મૌલિક આચિત્કારી ને અનેરાન અનુષ્ટાન - 19 સુ 22

ને તથા અનુષ્ટાન 25-28 ને ઘાણીએ કાર્યક્રમ ને કુદા
દેં અનેસિન હો, અને ન્યાયાલય ને વાદ પાઠ્ય કે નથી
શરૂઆત એ નિયમાની હો રહી લાગે એ સુવંધા કાર્યક્રમ કે

દ્વારાંત્રી વાવણીએ અનેસિન કે

કાર્યક્રમ આદ્ય જાનનાનું ને એ કાર્યક્રમ સુન્દરી એ પુણી
દેં હો,

(iii) સુધીના :- મારનીએ દુનિયાન ને અનુષ્ટાન - 14-18 ને સુધીના

જે આચિત્કાર પણ હુયા ગયા હો / એ આચિત્કારી હો
છે એ હિયાની ને અનુષ્ટાન 32 નથી 226 ને અનુષ્ટાન
સુન્દરી નાની/સુધી/દુનિયાન હોય, હિયાની -ન્યાયાલય
તથા કુદા ન્યાયાલય જો કુદાતી હો

દુનિયાની પ્રાચારી તથા ન્યાયાલય

જે કુદાની એ હો નાની અનુષ્ટાન/દુનિયાન હોય
કુદા દુનિયાની હો નિતન હો

(iv) સુધીના :- મૌલિક ઉત્તોભો ને ફેન્ડેન ને અનુષ્ટાન એ
સુન્દરી નાની હો ગયા હો / એ લાંબી મૌલિક ઉત્તોભો
એની નાની એ અનુષ્ટાન ને લિખ રાખી રહી હો /
એ કાર્યક્રમ આદ્ય દુનિયાન અનુષ્ટાન હોય હો

ED 58R, पुस्तकालय के गवर्नर

आपकी दृश्य इन्हें पर विश्रित है। अमर दृश्य
की प्राप्ति बिना अमर दृश्य अभी भूल देने की
प्रक्रिया रहे जो चिन्ता है। साथ ही, उक्त
स्मीटों के विषय मारते ही वह लक्षणों की
प्राप्ति दृश्य गवर्नर का पाठ है।

(b) पुस्तकालय में निविल 'बंधुल' की अवधारणा की नीति-नियमों
में अमर गवर्नर का उल्लेख है। मारत गवर्नर की विविध
दृश्य में बंधुल की छोड़ा है और अमर नाली चुराई गई
आलीसनाले छुपाए रखी है।

मारतीप दृश्यविधार ने पुस्तकालय में बंधुल की दृश्य लक्षण की
कृपा में अपारित उम्मीद गया है। साथ ही मारत की
विविधताओं का दृश्य है, इस उम्मीद बंधुल का व्याप्ति रखते हैं
में उक्त चुराई गई अली है।

मारतीप शास्त्र लेंगेहरा दृश्य

अमरकर ने अमरीप लोगों जाता है जो नीति-नियमों की
बंधुल की अवधारणा की गवर्नर का उल्लेख है।
नियमों की नियमित रूप से है —

(i) बंधुल की अवधारणा सालिक उत्तमी के अन्तर्गत गोलार्ध
उम्मीद गया है जो ने नीति वाला है अमर ने ही
आपालय के वर्तपाल्य है।

(ii) एक गवर्नर ने जारी की नियमानुप्रयोग की प्राप्ति अंतिम
पंक्ति का लक्षण गवर्नर की लित, आलीसी गोली

छंड जाते हैं।

(iii) भ्रष्टारों करते जाते विद्युत ने प्रायः गहरे छंड
की दृश्यता में लगा जाता है। जिससे जाति व जन-
घानिक लूपीकरण अंग्रेजीवन की गहरी है
जिससे बच्चों का जीवन होता है।

(iv) अभी विद्युत की स्थिति नागार्जुन जिमीटोली की
बातें पर दृश्यता एवं देखा जाता है जिससे
बच्चों की भवता, उनकी गहरी होती है।

भारत में विद्युता द्वारा कुछ
तथा बच्चों की अवधारणा है। लैंडिंग के कुछ
उदाहरितों का ना जापना उनका पड़ता है कि
विद्युतिका है -

(5) शायाचिंड लूपीकरण: जाति और दर्द आवाज़ों
प्रतिक्रिया / ~~प्रतिक्रिया~~

(6) खूले आवाज़ों अपमान:- आवाज़ों और दृश्य
सम्बन्धों की दृश्य उपर्युक्तरूप।

(7) नागार्जुन जिमीटोली बोले की रुपी तथा विद्युत
सम्बन्धीय शायाचिंड लूपीकरण की स्थिति है।

એ કુરીતિઓ ને ૧૯૫૬ —

① વંશ્વાળ ને આજોની જીવિતાદ્ય કથ કે મુલા-કુલ
જે છે ।

(ii) બડીલી હોં, પચા ગુલાદેશ, પાટુડાન, અણાનિન્દા
સીલંડા કૃપાદી, એ જીવિત કે ને કથણ હો
જાતા ને કી મારત દે વંશ્વાળ એ મારત
એવી કથ કે જીવિત હું છે ।

એ પ્રથમ એ કહેનું છે.
એ તે કુદીપી ને ૧૯૫૬ મારત દે વંશ્વાળ
એ અવયવાન મારત એ સીંગુલા, કુલા અણ
અખંતા કુટિનિંબ કરી કે કથણ રહી છે ।